राष्ट्रीय सांप्रदायिक सद्भाव पुरस्कार वितरण समारोह के अवसर पर प्रधानमंत्री का भाषण

2 अगस्त, 2005
नई दिल्ली

मैं अपने देश के उन प्रतिष्ठित नागरिकों को सम्मानित करना अपना सौभाग्य समझता हूं जिन्होंने सांप्रदायिक सौहार्द और सद्भावना कायम करने में अपना योगदान दिया है। मैं कबीर पुरस्कार-2004 के विजेता श्री रामशंकर सिंह और राष्ट्रीय सांप्रदायिक सद्भाव पुरस्कार-2004 के विजेता आचार्य श्री महाप्राज्ञ तथा अखिल भारत रचनात्मक समाज को हार्दिक बधाई देता हूं।

इन प्रतिष्ठित पुरस्कार विजेताओं ने अपना सम्पूर्ण जीवन सांप्रदायिक सद्भाव और धार्मिक सहिष्णुता के उन पवित्र आदर्शों के लिए समर्पित कर दिया है जो हमारी प्राचीन सभ्यता को परिभाषित करते हैं। भारत विश्व के सभी महान धर्मों का आश्रय स्थल रहा है। कुछ धर्म यहां पैदा हुए और कुछ अन्य धर्मों ने सहस्राब्दियों पहले यहां अपनी जड़ें जमा लीं। यह उप-महाद्वीप सदियों से एक ऐसा अद्वितीय सामाजिक और बौद्धिक वातावरण उपलब्ध कराता रहा है जिसमें बहुत सारे धर्म एक साथ अस्तित्व बनाए रख सकें।

कबीर पुरस्कार में लगभग छः सौ वर्ष पूर्व संत कबीर के जीवन और कार्यों पर आधारित नैतिक संदेश तथा आंतरिक विश्वास एवं सदभाव के व्यावहारिक दृष्टिकोण शामिल हैं। उनकी बहुत सी कविताओं, दोहों, भजनों और लोकोक्तियों में हिंदू तथा इस्लाम दोनों धर्मों की आध्यात्मिक भावनाओं का पता चलता है। इसने सदियों से आम आदमी की अंतर्रात्मा को झंझोरा है और उन्हें एक-दूसरे के साथ शांतिपूर्ण ढंग से रहने के लिए प्रेरित किया है। श्री रामशंकर सिंह एक असाधारण नागरिक हैं जिन्होंने एक सांप्रदायिक भीड़ को दूसरे धर्म के लोगों पर हमला करने से रोकने के लिए अपना जीवन दांव पर लगा दिया। इन्होंने ऐसा करने में गांधीवादी साहस और प्रतिबद्धता का प्रदर्शन किया।

श्री रामशंकर सिंह महात्मा गांधी के इस विचार से प्रेरित लगते हैं कि "मानवता ही सच्चा धर्म है।" उन्हें किसी धर्मनिरपेक्षता की व्यापक समझ की बजाय मानवतावादी विचार, जो

कबीर की शिक्षा का मूल है, से अपने साथी मनुष्यों के समर्थन में कार्य करने की प्रेरणा मिली। उनका धर्म अलग था लेकिन उनकी आस्था मानवतावादी थी और इसलिए उन्होंने दूसरों को बचाने के लिए हस्तक्षेप किया। श्री रामशंकर सिंह जैसे लोग सांप्रदायिक सद्भाव और राष्ट्रीय एकता के संरक्षक, परिरक्षक और समर्थक हैं। वे वास्तव में इस पुरस्कार के हकदार हैं और मैं एक बार फिर इसके लिए उन्हें बधाई देता हूं।

मैं मानता हूं कि हमारी धर्मनिरपेक्षता में मानवता होनी चाहिए। धर्म निरपेक्षता एक राजनैतिक अवधारणा नहीं है यह "जियो और जीने दो" का एक सामाजिक और सांस्कृतिक दर्शन है और यह राज्य द्वारा व्यक्ति की निजी आस्था में हस्तक्षेप मुक्त दर्शन है। कल मैंने प्रख्यात अर्थशास्त्री और नोबेल पुरस्कार विजेता डॉ0 अमर्त्य सेन को सुना जिन्होंने धर्मनिरपेक्षता की दो अलग-अलग व्याख्याएं कीं। एक विचारधारा राज्य को धर्म के प्रति निरपेक्ष रहने को धर्मनिरपेक्षता बताती है। दूसरी विचारधारा राज्य को किसी धार्मिक प्रतीक से अपने को अलग रखने को धर्मनिरपेक्षता बताती है। यद्यपि दूसरी विचारधारा पश्चिमी संकल्पना है, हमारे देश ने पहली विचारधारा को अपनाया है। हमारा राष्ट्र निरपेक्ष रहते हुए सभी धर्मों के सह-अस्तित्व को स्वीकार करता है।

दूसरी आस्थाओं वाले लोगों का अन्य धार्मिक मान्यताओं और चलन के प्रति सुविचारित दृष्टिकोण सांप्रदायिक सौहार्द के लिए एक पूर्वापेक्षा है। आचार्य श्री महाप्राज्ञ ने अपने लेखन कार्यों और व्यवहार के द्वारा इसका प्रयास किया है। लोगों में एक-दूसरे के प्रति आस्था और सौहार्द कायम रखने के प्रबल हिमायती होने के नाते उन्होंने शांति यात्राओं और मेल-मिलाप सम्मेलनों के जरिये विभिन्न धर्मों के लोगों के बीच एकता को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उनके कार्यों ने लोगों की चेतना को जगाया है और उन्हें दूसरों की आस्था का सम्मान करने के लिए प्रेरित किया है।

हमारे समाज में सहिष्णुता और समझ को कायम करने के बहुमूल्य प्रयासों को मान्यता देते हुए आचार्य जी को राष्ट्रीय सांप्रदायिक सदभावना पुरस्कार दिया गया है।

विभिन्न धार्मिक समुदायों के बीच शांति और समझ-बूझ स्थापित करने और देश में राष्ट्रीय अखंडता तथा शांति को बढ़ावा देने में उल्लेखनीय काम करने के लिए मैं अखिल भारत रचनात्मक समाज को भी बधाई देता हूं। इस समाज के कार्यकर्ताओं ने सांप्रदायिक हिंसा से प्रभावित क्षेत्रों में पहुंचकर शांति और सद्‌भावना कायम करने के लिए कदम उठाए हैं। उग्रवाद से प्रभावित पंजाब, जम्मू-कश्मीर के आतंकवाद से प्रभावित क्षेत्रों और गुजरात के सांप्रदायिक रूप से अशांत क्षेतों में निकाले गए शांति मार्च और राहत कार्य राष्ट्रीय एकता और सांप्रदायिक सौहार्द के प्रति इनकी प्रतिबद्धता के प्रमाण हैं। मैं उन्हें बधाई देता हूं।

कोई भी धर्म हिंसा का समर्थन नहीं करता। जो लोग धर्म के नाम पर हिंसा का सहारा लेते हैं, वे अपनी आस्था और मानवता का भला नहीं कर रहे हैं। सहिष्णुता सभी धर्मों का एक महत्वपूर्ण पाठ है। सभी महान साधु-संतों और शिक्षकों ने सदियों से हम लोगों को केवल एक ही संदेश दिया है, और वह है —— एक-दूसरे के प्रति सहिष्णु होना। कोई भी धर्म निर्दोष लोगों की हत्या की इजाज़त नहीं देता और धर्म के नाम पर तो कतई नहीं। विश्व के सभी धर्म महान है क्योंकि उन सभी ने प्यार और मानवता का संदेश दिया है।

सांप्रदायिक सद्‌भावना हमारे देश का एक मूल आधार है। भारत की इस प्राचीन भूमि पर विभिन्न समुदाय सदियों से शांतिपूर्वक और मेल-मिलाप के साथ रहते आए हैं। रामशंकर सिंह और आचार्य श्री महाप्राज्ञ जैसे व्यक्तियों के कार्य और रचनात्मक समाज के संस्थागत कार्यकलाप हमें सांप्रदायिक सद्‌भावना की परंपराओं को गहरा करने और उनकी सुरक्षा करने के लिए प्रेरित करते हैं। वे हमारी सराहना के पात्र हैं और उनके कायकलायों को व्यापक रूप से मान्यता देने की आवश्यकता है। इन्हीं शब्दों के साथ, मैं एक बार फिर सभी पुरस्कार विजेताओं को बधाई देता हूं और उनकी पूर्ण सफलता की कामना करता हूं। ईश्वर करे कि इनके द्वारा प्रेरित व्यक्तियों के रास्ते भी इसी प्रकार शुभकामनाओं से परिपूर्ण हो।

धन्यवाद।